कथा सरिता

अकबर ने माना रूह से रूह बात करती है

एक दिन बीरबल ने अकबर से कहा 'हुज़ूर! रूह, रूह से बात करती है।' अकबर ने पूछा 'यह कैसे संभव है?' तब बीरबल बोले हुज़ूर! आप मेरे साथ आइए।' अकबर ने ग्रामीण वेष धारण किया और नौकर वेषधारी बीरबल के साथ चल दिए। कुछ दूर बाद एक जंगल आया। वे उसमें प्रवेश कर गए। सामने ही एक लक्कड़हारा पेड़ों को काटता नज़र आया। बीरबल ने पूछा 'हुज़ूर! इस लक्कड़हारे के प्रति आपका क्या ख्याल है?' अकबर बोले 'इसे कोड़े लगाने की इच्छा हो रही है, क्योंकि यह हरे-भरे पेड़ काट रहा है।' बीरबल ने कहा 'अब उसके निकट चलिए।' उसके पास पहुंचकर बीरबल ने पूछा 'भाई! यह क्या कर रहे हो?' उसने कहा 'पेड़ काट रहा हूं, क्योंकि यह मेरी आजीविका का आधार है।' बीरबल बोले 'क्या तुम्हें पता है कि बादशाह अकबर इस दुनिया में नहीं रहे?' वह खुश होते हुए बोला - 'अच्छा हुआ, बहुत बदमाश था।' अकबर हैरान थे कि मेरी जो इसके प्रति धारणा है, वही इसकी मेरे प्रति है। थोड़ा आगे बढ़ने पर एक वृद्धा बकरी चराते हुए मिली। बीरबल ने अकबर के विचार जानने चाहे तो वे बोले 'इस पर श्रद्धा होती है, क्योंकि इस उम्र में भी काम करके अपने परिवार का पेट पाल रही है।' बीरबल ने उससे पूछा 'तुम बकरियां क्यों चराती हो?' उसने कहा 'परिवार के पालन-पोषण हेतु।' फिर बीरबल ने उसे भी बादशाह की मृत्यु की सूचना दी। सुनकर वह जोर-जोर से रोने लगी। तब बीरबल ने अकबर से कहा 'आपने इसके प्रति श्रद्धा की, तो उसने भी आपसे स्नेह किया। अब तो आप मानेंगे कि रूह, रूह से बात करती है।' अकबर ने इस तथ्य को स्वीकार किया। वस्तुत: सद्भाव से सद्भाव बढ़ता है और दुर्भाव से दुर्भाव। इसलिए सभी के प्रति अच्छा सोचें।

गुरू और शिष्य

एक युवा धनुर्धर ने अपने गुरु से धनुर्विद्या सीखी और जल्दी ही वह बहुत अच्छा निशाना लगाने लगा। तीर चलाने में वह इतना निपुण हो गया था कि अपने साथी से पूछता था कि बोलो कहां निशाना लगाना है। साथी बताता कि फलां फल को गिराकर बताओ और वह धनुर्धर तुरंत ही वैसा करके दिखा देता। अपनी इस विद्या पर धनुर्धर फूला नहीं समा रहा था। सफलता सर चढ़कर बोलने लगी। अब वह कहने लगा कि वह गुरुजी से बढ़िया धनुर्धर हो गया है। गुरुजी को जब यह बात पता चली तो उन्होंने कुछ भी नहीं कहा। एक बार गुरुजी को किसी काम से दूसरे गांव जाना था। उन्होंने अपने इसी शिष्य को बुलाया और साथ चलने को कहा। गुरु-शिष्य दोनों जब रास्ते से चले तो बीच में एक जगह खाई दिखी। गुरु ने देखा, खाई में एक तरफ से दूसरी तरफ जाने के लिए एक पेड़ के तने का पुल बना हुआ है। गुरु उस पेड़ के तने पर पैर रखते हुए आगे बढ़े और पुल के बीच में पहुंच गए। वहां पहुंचकर उन्होंने शिष्य की तरफ देखा और पूछा कि बताओ कहां निशाना लगाना है। शिष्य ने कहा कि वो जो सामने पतला सा पेड़ दिख रहा है उसके तने पर निशाना साधिए। गुरु ने तत्काल निशाना लगाकर बता दिया। गुरु सरपट पुल से इस तरफ आ गए। इसके बाद उन्होंने शिष्य से ऐसा करके दिखाने को कहा। शिष्य ने जैसे ही पुल पर पैर रखा, वह घबरा गया। पुल पर अपना वजन संभालकर आगे बढ़ना मुश्किल काम था। शिष्य जैसे तैसे पुल के बीच में पहुंचा। गुरु ने कहा, तुम भी उसी पेड़ के तने पर निशाना साधकर बताओ। शिष्य ने जैसे ही धनुष उठाया, संतुलन बिगड़ने लगा और वह तीर ही नहीं चला पाया। वह चिल्लाने लगा - गुरुजी बचाइए वरना मैं खाई में गिर जाऊंगा। गुरुजी पुल पर गए और शिष्य को इस तरफ उतार लाए। दोनों ने यहां से चुपचाप गांव तक का सफर तय किया। शिष्य के समझ में बात आ गई कि उसे अभी भी बहुत कुछ सीखना बाकी है। इसलिए कभी अपनी श्रेष्ठता का घमंड नहीं करना चाहिए।

अपूर्ण आस्था ने लिए पुजारी के प्राण

किसी गांव के मंदिर में एक पुजारी रहता था। वह दिन-रात भगवान की पूजा, ध्यान-आराधना करता रहता। गांव के लोग उसे सच्चे धर्मात्मा के रूप में मानते थे और वैसा ही आदर भी देते थे। एक बार पुजारी किसी अनुष्ठान के सिलसिले में दूसरे गांव की ओर जा रहा था। मार्ग में उसके गांव का एक बिगड़ा हुआ युवक मिला। युवक व्यसनी होने के साथ-साथ कुसंस्कारी भी था। उसने जब पुजारी को सामने देखा तो उसके मन में पुजारी का अपमान करने की कुटिल इच्छा पैदा हुई। उसने पुजारी को अपशब्द कहना शुरू किए। पुजारी ने अपनी गरिमा का ख्याल करके कुछ नहीं कहा और मौन ही रहा। इससे युवक को गुस्सा आ गया और उसने पुजारी को पत्थरों से मारना आरंभ कर दिया। इस आकस्मिक पिटाई से दु:खी होकर असहाय पुजारी ने 'नारायण नारायण' कहकर अपने बचाव के लिए भगवान को पुकारा। चूंकि वह पूजा-पाठी व्यक्ति था, नारायण अर्थात् विष्णु भगवान ने तत्काल उसकी पुकार सुनी और मदद के लिए जाने के उद्देश्य से अपने वाहन गरुड़ को बुलाया। उन्हें जाने के लिए उद्यत देख लक्ष्मीजी ने उनसे पूछा, 'भगवन, आप एकाएक कहां जा रहे हैं?' भगवान बोले, 'मेरे एक भक्त को एक युवक मार रहा है। उसने मदद के लिए मुझे पुकारा है। मैं उसकी रक्षा करने के लिए जा रहा हूं।' गरुड़ के आते ही भगवान उस पर सवार हुए, किंतु कुछ दूर जाकर वापस लौट आए। लक्ष्मीजी ने कारण पूछा, तो बोले, 'मैं उस पुजारी की रक्षा तब करता, जबकि उसकी पूर्ण आस्था मुझ में होती। अब उसने 'नारायण नारायण' पुकारना बंद कर दिया है। देखो लक्ष्मी, उस युवक ने पुजारी को मार गिराया है और वह घातक वार के कारण अपनी अंतिम सांसें ले रहा है।' आस्था पूरी होनी चाहिए। अधूरी आस्था होने पर यही गति होती है।

अति हर चीज़ की बुरी होती है

एक व्यक्ति अपनी पत्नी की कंजूस प्रवृत्ति से बहुत परेशान था। वह जब किसी असहाय की मदद के लिए थोड़ा-सा भी दान देना चाहता तो पत्नी उसे रोक देती। उनके घर से कभी भिक्षुओं को अन्न का एक दाना भी नसीब न हुआ और न ही कभी किसी गरीब के बच्चे को कुछ मिला। उस व्यक्ति का मानना था कि अपनी आय का एक अंश दान में देना चाहिए और यह अंश उन्हें दिया जाना चाहिए जिन्हें दान की वास्तविक आवश्यकता हो। किंतु पत्नी उसकी राय से सहमत नहीं रहती थी। उसका विचार था कि दुनिया में बड़े-बड़े सेठ-व्यापारी दान देने के लिए हैं, फिर हम सामान्य लोगों को यह काम कर स्वयं को गरीब बनाने की कोई ज़रूरत नहीं है। बहरहाल, वह व्यक्ति पत्नी की इस सोच से तंग आकर एक संत के पास पहुंचा और उन्हें पूरी बात बताकर इस समस्या का समाधान करने का आग्रह किया। संत ने उसकी पत्नी को अगले दिन बुलाया। जब वह आई तो उन्होंने उसे मुट्ठी बंद करके दिखाई। यह देखकर उस महिला ने इसका अर्थ पूछा। संत बोले, 'मान लो कि मेरी मुट्ठी सदा इसी तरह बंद रहे तो तुम क्या कहोगी?' महिला ने कहा, 'यही कि आपका हाथ विकृति का शिकार हो गया है।' तब संत ने अपनी बंधी मुट्ठी खोलकर पूछा, 'यदि यह सदैव ऐसे खुली रहे तो क्या मानोगी?' महिला बोली, 'यह दूसरे प्रकार की विकृति होगी।' उसका उत्तर सुनकर संत ने कहा, 'इसका अर्थ यह है कि तुम जानती हो कि अति हर चीज़ की बुरी होती है, तुम्हें अपने स्वभाव पर ध्यान देकर उसे सुधारना चाहिए।' महिला ने समझ लिया कि संत का संकेत उसकी अति कृपणता की ओर है। उसी दिन से उसने अपनी इस प्रवृत्ति का त्याग कर दिया। सार यह है कि हमें अपने स्वभाव में 'अति' से परहेज करते हुए संतुलित रवैया अपनाना चाहिए। तभी जीवन में सुख-शांति संभव है।

मन की लगन

नार्वे में फलेरा नामक रईस का एक नौकर था - एंटोनियो। एंटोनियो जब भी काम से खाली होता, पास के मूर्तिकार की दुकान के बाहर खड़ा हो मूर्तियां बनते देखता। मूर्तियां बनते देख उसे मूर्तियों की कुछ समझ आ गई थी। कई बार वह इस काम में कारीगरों की मदद भी कर देता। एक बार दुकान के मालिक ने उसे कहा, 'तुम यहां आकर वक्त क्यों बर्बाद करते हो?' एंटोनियो बोला, 'मुझे मूर्तियां बनते देखना अच्छा लगता है।' उसका आना जारी रहा। एक बार मालिक फलेरा ने कुछ लोगों को दावत दी। दावत स्थल की सजावट का काम भी मुख्य बैरे का था लेकिन उससे सजावट ठीक हो नहीं पा रही थी। मुख्य बैरे को परेशान देख एंटोनियो ने कहा, 'आप कहो तो मैं कोशिश करूं?' बैरे ने निराश मन से हामी भर दी। एंटोनियो ने कई किलो मक्खन मंगाया। जमे हुए मक्खन से उसने चीते की एक आकर्षक मूर्ति बनाकर मेज पर सजा दी। सभी ने मूर्ति की तारीफ की। मेहमानों में एक मूर्तिकला विशेषज्ञ भी था। जब उसे पता चला कि यह मूर्ति एक मामूली नौकर ने बनाई है तो उसने हैरान होकर एंटोनियो से पूछा - तुमने यह कला कहां सीखी? उसने कहा, 'पास की दुकान पर मूर्तियां बनते देखकर मैंने मन की प्रेरणा से यह कला सीखी है। लगन कुछ भी सिखा सकती है। बस आवश्यकता है सच्ची दिल से कुछ करके दिखाने की तीव्र लालसा।

रामबाग-इंदौर। नवनिर्वाचित विधायक उषा ठाकुर को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. छाया तथा ब्र.कु. भावना।

दिल्ली-प्रेम नगर। यात्रा का शुभारंभ करते हुए "सूचना विद न्यूज़पेपर" के सम्पादक सुरेश प्रकाश। साथ हैं ब्र.कु.जनक, ब्र.कु.नरेन्द्र तथा अन्य।

रांची-झारखण्ड। मकर संक्रान्ति के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा की धर्मपत्नी मीरा मुंडा, सी.एम.पी.डी.आई. कस्तूरी महिला सभा की अध्यक्ष नीलांजना देवनाथ, उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता ज्ञानेन्द्र कुमार, ब्र.कु.निर्मला तथा ब्र.कु.भगवान,माउण्ट आबू।

पतौरा-बिहार। पूर्वी चम्पारण जिला शिकायत कोषांत्र पदाधिकारी नवल किशोर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सीता। साथ हैं ब्र.कु.रेखा, ब्र.कु.शोभा, ब्र.कु.वीणा तथा ब्र.कु.आशा।

नांगल डैम-पंजाब। श्रीमति एवं श्री एम.सागर मैथ्यूज़ को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुष्मा। साथ हैं श्री के.के.चतुर्वेदी,मुख्य महाप्रबंधक एन.एफ.एल. नांगल यूनिट और ब्र.कु.विवेक।

दिल्ली-शालीमार बाग। रामलीला में संगीत संध्या के प्रोग्राम में अध्यक्ष द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए ब्र.कु.कृष्णा, ब्र.कु.पुनीत तथा ब्र.कु.खिमिया।